प्रकाशनार्थ

गोरखपुर, 26 सितम्बर। गोरखनाथ मन्दिर में **युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 49वीं पुण्यतिथि एवं ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की चतुर्थ पुण्यतिथि समारोह** के अन्तर्गत ''**भारतीय संस्कृति में गो–सेवा का महत्व**'' संगोष्ठी में मुख्य अतिथि हिमांचल प्रदेश के **मा0 राज्यपाल श्री आचार्य देवब्रत जी** ने कहा कि भारत में नई कृषि क्रान्ति का युग दस्तक दे रहा है। भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ जी ने कृषि को भारत की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार बनाने का जो अभियान छेड़ रखा है वह जीरो बजट कृषि योजना और गो वंश के संरक्षण संर्वधन से ही पूर्ण होगा। गो वंश की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका है। आगे भारतीय नश्ल की गायों पर हुए शोधों ने यह सिद्ध कर दिया है कि कृषि रासायनिक खादो और जैविक खादों की अपेक्षा गो वंश के गोबर और गो मूत्र पर आधारित खेती न केवल हमारी लागत शून्य करेगी अपितू स्वास्थ्य वर्धक अन्य का उत्पादन करेगी और किसानो की आय मे अकल्पनीय वृद्धि होगी। न्यूजीलैंड एवं आस्ट्रेलिया में पशु वैज्ञानिकों ने भारतीय नश्ल की गायों और जर्सी गायों के दूध पर जो शोध निष्कर्ष दिये है वह हमारी ऑख खोलने वाला है। जर्सी गायों का दूध उतेजना पैदा करता है। विशाद पैदा करता है। रक्तचाप बढ़ाता है। जबकि भारतीय नश्ल की सभी गायों का दूध मानव स्वास्थय के लिए अमृत है। भारतीयों ऋषियों ने यह शोध आज से हजारों वर्ष पहले कर लिया था। वेद के रचयिताओं ने लिखा है कि गाय विश्व की माता है। गाय की महत्व को इस बात से भी समझा जा सकता है कि मॉ की ही तरह नौ माह दस दिनों में गाय भी बच्चा देती है। मॉ के दूध के बाद एक मात्र गाय का दूध मॉ के दूध जैसा अमृत है। गुजरात प्रान्त के पशु चिकित्सको की एक टीम नें गिरि नश्ल की गाय पर शोध किया है। और उन्होनें यह प्रमाणित किया है कि गो मूत्र में स्वर्ण होता है। एक गाय के गो मूत्र से एक वर्ष में लगभग 55000 हजार रूपये का स्वर्ण प्राप्त किया जा सकता है। हमारे शास्त्र पहले से कहते है कि गाय के पेट में सवा मन सोना होता है।

उन्होनें गो वंश पर आधारित कृषि और कृषि उत्पादों पर नये शोध एंव उनके स्वयं के द्वारा किये जा रहें प्रयोंगो को विस्तार से रखा। उन्होनें कहा कि इधर के 30–40 वर्षो में हमने रासायनिक खादों के माध्यम से खाद्यानों में जहर घोला है। जिसके कारण चिकित्सालय भरे पड़े है। इधर जैविक खेती का प्रचार–प्रसार शुरू हुआ है जो अव्यवहारिक है जो मैं स्वयं अपने खेतों में इसकी स्थलता प्रमाणित कि है। जैविक खेती के लिए एक एकड़ खेत में तीन सौ कुण्टल खाद चाहिए और इसके लिए 18–20 गो वंश चाहिए। जबकि पद्म श्री सुभाष कालेकर द्वारा जीरो बजट आधारित प्रकृतिक खेती का जौ तरीका खोजा गया है। वह भारत के खेतो और किसानों की काया पलट देगी। मैं अपने दो सौ एकड़ खेतो में इस प्रयोग को आजमा रहा हुॅ। एक गाय से तीस एकड़ खेती की जा सकती है। यह प्रमाणित हो चुका है कि जर्सी गाय के एक ग्राम गोबर में 77–78 लाख जीवाणु होतें हैं जबकि भारतीय नश्ल की गायों के एक ग्राम गोबर में 300–500 तक के जीवाणु पायें गयें हैं। एक गाय के 24 घण्टे के गोबर और गो मूत्र से बनाई गयी खाद से एक एकड़ खेती कराई जा सकती है। उन्होनें खाद बनाने की विधि का विस्तार से वर्णन किया है। उन्होनें कहा कि भारतीय नश्ल के गायों के गोबर और गो मूत्र में ही वह ताकत है कि उसर भूमि को एक वर्ष में उपजाउ बना देगीं। उन्होनें ने आहवाहन किया अब समय आ गया है कि भारत में भारतीय गो वंश पर आधारित वैज्ञानिक कृषि प्रारम्भ की जाय। भारत दुनिया भर को खाद्यान उपलब्ध कराने में समर्थ होगा। गांव का पैस गांव में और शहर का पैसा भी गांव में जायेगा। उन्होंने कहा कि गाय पशु नही अपितु हिन्दुत्व की आत्मा है। गो–सेवा विषय नही हमारा अस्तित्व है। पंच गव्य के बिना मानव द्विज नही हो सकता। भगवान का धरती पर अवतरण गौ माता की रक्षा के लिए होता

रहा है। गौ माता और धरती माता अभिन्न है। गौ माता को स्थिर रूप में देखना हो तो धरती मॉ को देखों और धरती मॉ को चलते फिरते देखना हो तो गौ माता को देखो।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यंमंत्री **गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज** ने उत्तर प्रदेश में अवैघ बूचड़ खाने बंद हो चुके हैं। हर जनपद में एक बड़ी गोशाला खोलने की योजना बनाई जा चुकी है। जिसमें 5 से 10 हजार तक गो वंश का पालन–पोषण किया जायेगा। इन गो सदनों के लिए जनता को भी आगे आना होगा। 23 करोड़ की आबादी के उत्तर प्रदेश मे 4 करोड़ गो वंश है यदि एक परिवार एक गो वंश के संरक्षण का जिम्मा ले तो हम उत्तर प्रदेश मे ं गो वंश संरक्षण और संवर्धन का एक ऐसा मानक बनायेंगे जो अद्वितीय होगा जीरो बजट खेती भारत का भविष्य बदलेगी। गांव, गरीब और किसानों के चेहने पर यदि खुशहाली लाना है तो हमें गो माता का संरक्षण और संवर्धन करना ही होगा समृध भारत और समर्थ भारत का जगद्गुरू रूपी भवन ऋषि और कृषि आधारित अर्थ व्यवस्था पर ही संभव है।

उन्होनें ने आगे कहा कि धर्मरक्षा, स्वास्थ्य रक्षा, आर्थिक लाभ और पर्यावरण की दृष्टि से गौ तथा गौवंश का संरक्षण एवं संवर्धन आवश्यक है। हमारे वैदिक ग्रन्थों से लेकर पौराणिक ग्रन्थों तक में गाय की महिमा गायी गयी है। 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम गोमाता के प्रति आस्था के प्रश्न के गर्भ से ही उपजा था। भारत के राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने 1967 में घोषणा की थी कि नवगठित सरकार गौ हत्या पर प्रतिबन्ध लगायेगी। भाई जी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, बाबा राघवदास, स्वामी करपात्री जी, लाला हरदेवसहाय जैसे महापुरूशों के नेतृत्व मं गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध के लिए जन–जागरण एवं आन्दोलन चलाए गये। आज भी अहिंसा के पुजारी इस देश में बड़ी संख्या में गो वंश की प्रतिदिन हत्या होती है। महन्त जी महाराज ने कहा कि भारतीय संस्कृति यज्ञ की संस्कृति हैं। गोमूत्र, गोदूध, गोबर, गोघृत आदि के बिना पंचामृत एवं यज्ञ की कल्पना ही नहीं की जा सकती। गोमाता हमारी यज्ञ संस्कृति की प्रतीक है। ये हमारे सामाजिक–आर्थिक–धार्मिक जीवन की धुरी है। भारत का बोध वाक्य रहा 'भारत देश से नाता है गो हमारी माता है' ऐसे देश में गौ वंश की हत्या महापाप है। गौ धन की रक्षा का संलल्प देश की वर्तमान आवश्यकता है।

नैमिषारण्य से पधारे स्वामी विद्या चैतन्य जी ने कहा कि 33 करोड़ देवी–देवता जितना मानव पर उपकार नही कर सकते उतना गौ माता अकेले कर सकती है। इसलिए ही हिन्दू गोमाता में तैंतीस करोड़ देवी–देवताओं का हम एक साथ दर्शन करते हैं। अपनी सरलता और उपयोगिता के कारण गौ वंश की महत्ता प्रायः सभी सभ्य देशों में न्यूनाधिक रूप से विद्यमान है। भारत जैसे धर्मप्राण एवं कृषि प्रधान देश में तो जननी और जन्मभूमि के समान लोक वंद्य माता के रूप में गौ और गौवंश की महत्ता अनादिकाल से है। गाय, गीता और गंगा भारतीय संस्कृति की प्रतीक है। गीता की तरह ही गाय पूज्य है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि गौ रूद्रो की माता हैं। गाय हिन्दू–मुसलमान–ईसाई का भेद नहीं करती बल्कि सभी को एक समान मीठा दूध देती है। अतः देश की संसद सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर प्रतिबंध लगाने सम्बन्धी कानून बनाये। भारत में गो और गौ वंश का अस्तित्व खतरे में है। भारतीय संस्कृति और भारत की आत्मा को और अधिक लज्जित, लांछित तथा कृतध्न होने से बचाया जा सके।

जगद्गुरू अनन्तानन्द द्वाराचार्य स्वामी डॉ0 रामकमलदास वेदान्ती ने कहा कि ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज भारत में गोरक्षा आन्दोलन के अग्रणी नेताओं में एक थे। स्वतंत्रता के बाद से ही गोवंश की हत्या रोकने सम्बन्धी कानून बनाने के लिए धर्माचार्यों ने अनेकों बार अभियान चलाया। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने गोवध बन्दी को आवश्यक मानने हुए कहा था कि गोरक्षा का प्रश्न मेरे लिए स्वराज्य से भी अधिक महत्वपूर्ण है। ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा था कि

यदि गाय नष्ट हो गयी तो भारतीय संस्कृति नष्ट हो जायेगी। अतः श्रीराम–कृष्ण के इस देश में गोवंश की हत्या हमारे लिए शर्म की बात है। साध्वी ने आगे कहा कि गोरक्षा केवल कानून बनाने से नहीं होगी इसके लिए समान जनमानस को जागरूक होना पड़ेगा। जिस गाय की हम दूध पीते है उसी को हम वृद्ध होने पर कस्साईयों के हाथ बेच देते हैं। जब तक प्रत्येक हिन्दू व्यक्ति धार्मिक आधार पर गोसंरक्षण के बारे में नही सोचेगा तब तक गोरक्षा संभव नही है। गोरक्षा के लिए गोरक्षपीठ प्रारम्भ से ही संकल्पित है। हमें यहॉ से संकल्प लेकर जाना है कि जहॉ तक संभव होगा गोरक्षण में अपनी सहभागिता निभायेंगे। जनजागरण एवं जनसंघर्ष के बिना गोरक्षा का अभियान पूरा नहीं होगा। सर्वमयी गौ हमारे लिए वरदायिनी है। उन्होनें कहा समुद्र मन्थन के फलस्वरूप उत्पन्न 14 रत्नों में 'सुरभि' अर्थात गौ भी थी। गायों को तीनो लोकों की माता कहा गया है। पुण्यकामी गृहस्थ जनों को गौ सेवा करनी चाहिए। जो गौ सेवा परायण होता है उसकी श्री वृद्धि शीघ्र होती है। भविष्य पुराण में कहा गया है गौ की पीठ में ब्रम्ह, गले में विष्णु, मुख में रूद्र प्रतिष्ठित है।

परम गौ भक्त प्रहलाद दास ब्रम्हचारी जी ने कहा कि भारत में प्रतिवर्ष गोबर आदि जैविक खाद के अभाव में लगभग 6 से 7 प्रतिशत भूमि बंजर होती जा रही है। ऐसे में गो और गोवंश की उपयोगिता हमारे कृषि कार्य हेतु अपरिहार्य बनती जा रही है। धर्म और आध्यात्म के साथ–साथ आर्थिक स्वावलम्बन के लिए भी गोवध पर पूर्ण प्रतिबंध देश की आवश्यकता है। यदि मानव की रक्षा करनी है तो गो और गंगा की रक्षा करनी होगी।

संगोष्ठी की प्रस्ताविकी करते हुए पूर्व कुलपति प्रो0 यू0पी0 सिंह ने कहा कि जिस गौ को हम माता मानते है, कृषि प्रधान देश में हमारे आर्थिक संरचना की जो रीढ़ है, उसी गोवंश का अस्तित्व ही जिस प्रकार आज खतरे मे है वो भारत के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है और चिंता का विषय है। गोमाता की सेवा के बगैर लोक–परलोक दोनों जीवन अधूरा है। गोमाता सनातन अस्मिता की प्रतीक है। योगी आदित्यनाथ जी महाराज संसद में गोवंश के रक्षा की लड़ाई लड़ते है, यह गोरखपुर के लिए सौभाग्य की बात है। हम भी लोकचेतना को जाग्रित करें और गोसेवा का व्रत ले।

गोसेवक एवं पूर्व पशुधन प्रसार अधिकारी **वरुण कुमार वैरागी** ने गो रक्षा पर कविता का पाठ किया। सम्मेलन का शुभारम्भ दोनों ब्रह्मलीन महन्त जी महाराज को अतिथियों द्वारा पुष्पांजलि से हुआ। पं0 रंगनाथ त्रिपाठी द्वारा वैदिक मंगलाचरण, श्री पुनीत पाण्डेय एवं प्रियांशु चौबे द्वारा गोरक्ष अष्ठक पाठ प्रस्तुत किया गया। डॉ0 शैलेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ0 अरविन्द चतुर्वेदी, डॉ0 नीरज सिंह, डॉ0 अरूण कुमार तिवारी, डॉ0 आर0एल0 गाडिया, डॉ0 धर्मचन्द्र विश्वकर्मा, डॉ0 शिवानी सिंह, डॉ0 गिरिशचन्द्र पाठक ने अतिथियों का स्वागत किया एवं संचालन डा0 श्रीभगवान सिंह ने किया।

पुण्यतिथि समारोह में आज

युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 49वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की चतुर्थ पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत कल 27 सितम्बर,2018 को प्रातः 10.30 बजे **'स्वच्छ भारत अभियान समर्थ भारत अभियान की आधारशिला है'** विषयक सम्मेलन।

समारोह में दिगम्बर अखाड़ा के महन्त सुरेशदास जी महाराज, बड़े भक्तमाल अयोध्या के श्री अवधेशदास जी महाराज, महन्त शान्तिनाथ जी, महन्त गंगा दास जी, महन्त मिथलेशनाथ जी, डॉ0 दीनानाथ राय, महन्त रविन्द्रदास जी, महन्त प्रेमदास जी, महन्त राममिलनदास जी सहित देश भर से आये सन्त महात्मा एंव प्रबुद्ध जन प्रस्तुत थे।

अखण्ड ज्योति

युगपुरुष ब्रह्मलीन
महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज
राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन
महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज
श्रद्धांजलि सप्ताह समारोह 2018
संगोष्ठी - "भारतीय संस्कृति में गो-सेवा का
26 सितम्बर 2018, पूर्वाह्न 10:30 बजे
पुण्यतिथि आयोजन समिति